(1)

लोक कथा

बालक से वृद्धों तक लोक कथा अपनी जीवन्त शक्ति के परिणामस्वरूप मानव की आदिम अवस्था से आज तक, तथाकथित वैज्ञानिकता एवं तर्कशक्ति प्रधान युग में भी साधारणजन के कंठ का हार बनी हुई है। इसकी सरलता ने सदैव सभी के मन को मोहित किया है। रुचिरता एवं जिज्ञासा ने लोक कथा के लिए संजीवनी का काम किया। आदिम मानुस का मनोरंजन करनेवाली लोककथा आधुनिक काल में भी मानव के मनोरंजन का प्रमुख साधन है। इन कथाओं ने अनेक प्रकार के सच्चरित्रों व दुष्टचरित्रों को उभारकर भावी पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत किया है। उनके आधार पर श्रोता एवं पाठक अपने जीवनपथ को निर्धारित कर सकते हैं। उनमें व्यक्ति के व्यक्तित्व को नहीं अपितु चरित्र को महत्ता दी गई है क्योंकि ये चरित्र ही सामाजिक धरोहर होते हैं। ये बने-बनाए चरित्र ही व्यक्ति के साथ जोड़े जाते हैं। लोककथा की व्यापक सत्ता के संबंध में डा. सत्येन्द्र का विचार है- "कहानी लोक मानस की मूलभावना के रूप को स्थूल प्रतीक से अभिव्यक्त करती है। यह प्रयत्न जीवन के सभी क्षेत्रों में होता है। अतः कहानी की सत्ता की व्यापकता सिद्ध होती है।"

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल मानव के सुख-दुःख, प्रीति, शृंगार, वीरभाव और बैर इन सबने खाद बनकर लोककथाओं

Scanned with CamScanner

(2)

को पुष्ट किया है। रहन-सहन, रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास, पूजा, उपासना आदि इन सबसे कहानी का ठाट बनता और बदलता रहता है। कहानी मनुष्य के लिए अपूर्व विश्रान्ति का साधन है। मन के आयास को हटाने के लिए कहानी मानव समाज का प्राचीन रसायन है।"

वंशानुगत मौखिक साहित्य में लोककथाओं का विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक देश की लोककथाएँ वहाँ की सामाजिक, आर्थिक दशाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।

* लोक कथाओं का वर्गीकरण -

प्राचीन आचार्यों ने कथासाहित्य को दो भागों में बाँटा है - 1.) **कथा** - जिसमें कल्पना की प्रधानता होती है। ★ Imp.

2.) **आख्यायिका** - Imp. जिसकी आधारशिला ऐतिहासिक घटना मानी जाती है।

1.) धार्मिक कथाएँ
2.) ऐतिहासिक कथाएँ
3.) अलौकिक कथाएँ
4.) सामाजिक कथाएँ
5.) नीतिकथाएँ
6.) हास्यकथाएँ
7.) पशु-पक्षी संबंधी
8.) शौर्य प्रधान कथाएँ
9.) प्रेम-प्रधान कथाएँ
10.) पुण्य प्रधान कथाएँ
11.) धर्म व्रत कथाएवं त्योहारविषयक
12.) पौराणिक कथाएँ आदि।

Scanned with CamScanner

Date: / /

दिनभर के कठिन परिश्रम से थके हुए, जीवन की विषमताओं से जूझते हुए व्यक्ति रात्रि के समय चौपाल आदि पर एकत्र होकर कथाएँ कहकर अपना मन बहलाव किया करते थे। भावना और कल्पना के ताने-बाने से निर्मित ये कथाएँ कभी-2 कई रातों तक चलती रहती थी। इन कथाओं के कहने का एक विशेष ढंग होता है जो श्रोता को प्रतिपल सजग और जिज्ञासु बनाए रखता है। इन कथाओं का आरंभ एवं अंत एक अजीब रीति से सम्पन्न किया जाता है। कथा कहने वाला बहुत थोड़े परिवर्तन के अतिरिक्त परंपरित कथन शैली का ही प्रयोग करता है। राजस्थानी लोक कथाओं के आरंभ एवं अंत का एक विशेष ढंग है। प्राचीनकाल में राजदरबारों में कुशल कथावाचकों के साथ 'हुशियार हुंकारिये' भी हुआ करते थे। राजस्थान में हुंकारा देने वाले को हुंकारियाँ कहा जाता है। 'बात में हुंकारो फौज मे नगारो' वाक्य में हुंकारे की महत्ता प्रतिपादित होती है। कथा कहने से पूर्व वक्ता कुछ पद्यात्मक उक्तियों का लयपूर्ण उच्चारण करना है। इन पद्यों को राजस्थानी में छोगे कहा जाता है। इन छोगो में कहीं श्रोता की जिज्ञासा वृत्ति को जागृत करने हेतु प्रयत्न किया गया है, तो कहीं सामाजिक विषमता आदि का उल्लेख है। कहीं अलौकिक और काल्पनिक चित्र चित्रित किए गए है, कहीं असंभाव्य घटना का वर्णन किया गया है, कहीं भले-बुरे का भेद बताया गया है।

लोक कथा के माध्यम से ही रीति, नीति और सामाजिक रीति का पाठ पढ़ाया जाता है। कथा कहने का भी एक विशेष ढंग होता है। अवसरानुकूल भाषा का प्रयोग, पात्रानुरूप अंग संचालन, उपयुक्त स्थान पर पद्य का उच्चारण, मर्मस्पर्शी दृष्टांत योजना, भावों के अनुकूल स्वरों का आरोह तथा मुखाकृति करना आदि वक्ता के विशिष्ट गुण माने जाते हैं। यही कारण है कि प्राचीन

समय में पेशेवर बातपोश (कथा कहने वाले) हुआ करते थे। इन्हें राजदरबार में उचित स्थान एवं आदर मिलता था। कथा कहने वाला मूलकथा के प्रारंभ से पूर्व "तो राम जी भला दिन दे" यह वाक्य कहा करता है और कथा का आरंभ होता है। इसके अतिरिक्त कथाओं की समाप्ति पर सत्य के आधार पर व्यतीत किए जाने वाले जीवन का अमर संदेश श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है। कुटिल चरित्रों की भर्त्सना और आदर्श चरित्रों की प्रशंसा की जाती है। जीवन को कल्याणकारी बनाने के लिए नीतिज्ञान दिया जाता है।

* लोक कथा का वर्गीकरण →

1.) ऐतिहासिक वीरचरित्रों की कथाएँ →

राजस्थान प्रदेश में बात और ख्यात की समृद्ध परंपरा रही है। जन और धन की रक्षा के लिए प्राण उत्सर्ग कर देने वाले वीरों, सतीत्व रक्षक नारियों आदि के चरित्रों के आधार पर अनेक बातें लिखी गयी। यहां के नर रत्नों ने मान के मूल्य को सदैव समझा है। ऐसी बातों से लोगों को नीति की शिक्षा दी जाती थी। इनसे आने वाली पीढ़ी का पथ-प्रदर्शन होता था। इस वर्ग में रखी जाने वाली कथाएँ प्रायः प्रदेश विशेष तक सीमित हुआ करती है। ये ऐतिहासिक कथाएँ घटित तथ्यों पर आधारित होती है। ऐतिहासिक कता प्रधान इन बातों में राजस्थान का इतिहास भरा पड़ा है। इन कथाओं से तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का बोध होता है। इन कथाओं में राजपूती शौर्य की, शानो शौकत की, छल प्रपंच भरी राजनीति की अनेकानेक घटनाएँ भरी पड़ी है। उस काल में किसी भी क्षण युद्ध का वातावरण उपस्थित हो सकता था। यह इन कथाओं से पूर्णतः स्पष्ट होता है। मुख्य रूप से ऐसी

(5)

कथाओं का निर्माण स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने हेतु, आदर्श स्थापन हेतु, आश्रयदाता शासक के कहने किया जाता था। 'जगदेव पंवार रीबात' त्याग के क्षेत्र एक अद्भुत कीर्तिमान स्थापित करती है। इन ऐति. वीर कथाओं में → 'बात अमरसिंह- गजसिंह चौतरी', 'बात अजीत सिंहजी री', 'बात आसनाथ री', 'बात कांघड़जी री', 'बात तिड़ेराव छाड़ावत री', 'बात पाबू जी री', 'बात राव... 'बात राणा अमरा रै बिखै री', 'बात अणतराय सांखले री' आदि प्रमुख है।

2) प्रेमप्रधान कथाएँ →

इस प्रकार की कथाओं के माध्यम से प्रदेश के प्रेमी-युगलों की याद को सदैव ताजा रखा गया है ये कथाएँ लोक के कंठ का हार मानी जाती है। प्रेमी इन कथा चरित्रों के उदाहरण प्रस्तुत कर अपने प्रेम की उत्कृष्टता को सिद्ध करना चाहते हैं। बंगाल में पारो और देवदास की कथा व पंजाब में हीर-रांझा तथा सोहनी-महिवाल की कथा का अत्यधिक प्रचलन है। राजस्थान में ऐसे प्रेमियों की कथाओं की संख्या बहुत अधिक है। इन प्रेम कथाओं में- 'बात बींझे-सोरठ री', 'बगशीराम-प्रोहित जै हीरां री', 'आभल खींवजी री', 'ऊमादे-भटियाणी री', 'गुलाब-भंवर री', 'पन्ना-वीरम दे', 'मूमल-महेन्द्र री', 'रतना-हमीर री', 'बाघे-भारमली री' आदि प्रमुख हैं। राजस्थान में प्रेम कथाओं में संयोग-वियोग दोनों अवस्थाओं का बहुत सुंदर चित्रण हुआ है। इन कथाओं में सर्वत्र प्रथम दृष्टि प्रेम की महत्ता को प्रकट किया गया। इन प्रेम कथाओं में कहीं-2 प्रेमी से निश्चित अवधि में धनराशि लाने के लिए कहा गया है। ऐसा न करने पर मृत्यु का वरण कर लेती है और उसके वियोग में प्रेमी या तो मर जाता है या पागल हो जाता है। ~~......~~

राजस्थानी मानस ने मुसलमान प्रेमियों को भी आदर की दृष्टि से देखा। 'जलाल-बूबना',

Scanned with CamScanner

कथा' इस बात का उदाहरण है।

3.) अद्‌भुत कार्यों से संबंधित कथाएँ →

इस श्रेणी में स्थान पाने वाली लोक कथाओं में किसी अद्‌भुत कार्यों का वर्णन पाया जाता है। चरित नायक अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए ऐसे कार्यों को प्राणों की बाजी लगाकर भी पूरा करता है। इन कार्यों की ओर कभी नायक स्वयं प्रेरित होता है और कभी स्वप्न दर्शन इस प्रकार की प्रेरणा का आधार बनता है। कभी सौतेली माता जानबूझकर झूठे बहाने बनाकर सौतेले पुत्र को ऐसे अनहोने कार्य के लिए बाध्य करती है, कभी किसी परिचारक की रूपवती पत्नी को पाने के इच्छुक राजा द्वारा उसके पति को ऐसे असामान्य कार्य सौंपे जाते हैं। इन कार्यों में डायन के हाथ का स्वर्ण कड़ा प्राप्त करना, शेषनाग की मणि को प्राप्त करना, अमृत लाना, शेरनी का दूध लाना, स्वर्ग में वास करने वाले पूर्वजों तक संदेश पहुँचाना, अमर फल लाना, नदी में प्रवाहित किए गए हार को पुनः प्राप्त करना आदि प्रमुख हैं। ऐसी कथाओं में फूँक रा फूल, सूब्बो हंदी सेज, आसकरण, मसांण री माया, आठ राजकुँवर, गोगा रो जिमण, रंक बण्यौ राजा आदि राजस्थानी लोक कथाओं के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

4.) सर्प कथाएँ →

लोक कथाओं में सर्प कथाओं की एक समृद्ध परंपरा प्राप्त होती है। इन कथाओं का संबंध वैदिककालीन नाग पूजा से स्थापित किया जा सकता है। लोक देवता गोगाजी Imp.★ और केसरिया कंवर तो नागदेवता के रूप में ही प्रसिद्ध हैं। छोटी-2 हंसी-मजाक की बात वाली कथाओं से लेकर रातभर चलने वाली सर्प कथाएँ मिलती हैं। प्रकाशमान मणि को धारण करने वाले साँप और उसकी पुत्री नाग कन्या का वर्णन तो हमें कई राजकुमारों की साहसिक एवं अद्‌भुत कार्य सम्पन्न करने

वाली कथाओं में मिलता है। पाताललोक को तो नागलोक की संज्ञा से जाना जाता है। शेषनाग को इस लोक राजा माना गया है। कुछ कथाओं में दैवीय शक्ति सम्पन्न पात्रों को अभिशाप एवं सर्पयोनि में जीवन बिताते हुए दिखाया गया है कुछ कथाएँ ऐसी भी मिलती हैं जिनमें प्रेमी के प्रतीक रूप में साँप का चित्रण किया गया है। कहीं-2 अविवेकी पत्नी पड़ोसन के बहकावे में आकर अपने पति की जाति पूछने का हठ करती है। अंततः सरोवर पर पहुँचकर पति ज्यों ही सर्प रूप में परिवर्तित होता है तब वह अपने दुर्भाग्य को कोसती है। कहीं-2 निःसंतान व्यक्ति के वहाँ पुत्र रूप में रहकर उसके जीवन को सर्प ही सुधारते हुए दिखाई देते हैं। कहीं ससुराल वालों के अत्याचारों से व्यथित वधू सर्प के राखी बाँधकर बहुत सारा धन प्राप्त करती है, कई सर्प पात्र ऐसे होते हैं जो जब तक उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है, तब तक वे भी सद्‌व्यवहार करते हैं और ज्यों ही उनके साथ घात किया जाता है तो वे भी उसका बदला लेते हैं।

इन सर्प कथाओं में हितकारी (सुगरा) और अनिष्टकारी (नुगरा) दोनों प्रकार के सर्पों का चित्रण देखने को मिलता है। कुछ ऐसी सर्प कथाएँ भी प्रमुख हैं- रसकस दिवलो बळे, नुगरो साँप, लिखिया लेख टळे, सीधो हिसाब (महत्वपूर्ण कथाएँ), कालिंदर री सुगराई, नागण धारी बंस बधे, जून्यो [illegible] सरप, पीव्ळो साँप आदि।

5.) साधु-संन्यासियों से संबंधित लोककथाएँ-

सामाजिक दायित्व की दृष्टि से साधु-सन्यासियों का भी बहुत बड़ा कर्तव्य है। राजस्थानी लोककथाओं में साधु-सन्यासियों की अनेक कथाएँ मिलती हैं। इन साधुओं को तपस्या के बल पर विविध प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इन सिद्धियों का उपयोग ये साधु समाज विरोधी तत्वों

जैसे भूत-प्रेत, डाकी-डाकन के विनाश के लिए किया
करते है। इनके वरदान से कई निःसंतान दम्पतियों
के निरस एवं अभिशप्त जीवन को सुखी जीवन में बदल
दिया जाता है। इन साधुओं के मंत्रोपचार से अनेक
प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं। शकुनशास्त्र में निपुण
और भाग्यवेत्ता ये साधु समाज में सर्वत्र आदर पाते हैं।
कपटी, छद्मवेशधारी, लम्पट साधुओं की भी अनेक
कथाएँ लोक में प्रचलित है। इनका ज्ञान थोथा और
सारहीन होता है। ये साधु श्मशान जगाने, मूठ फेंकने,
कामण करने जैसी अनिष्टकारी कलाओं में पारंगत हुआ
हुआ करते है। भोली-भाली नारियों को भ्रमित कर
पथ भ्रष्ट करने में इन साधुओं को अत्यंत आनंद की
प्राप्ति होती है।

6.) चोर, ठग और धाड़ायतियों से संबंधित कथाएँ :-

कलाओं
और विद्याओं में चोरी की कला व ठग विद्या को भी
स्थान मिला है। इन कथाओं के पात्र अत्यधिक कुशाग्र
बुद्धि सम्पन्न, अनेक प्रकार की मानवीय बोलियाँ एवं पशु-
पक्षियों की बोलियाँ निकालने में प्रवीण, कुशल-चालबाज,
पदचिह्नों को पहचानने में निपुण, विविध वेश विन्यास में
पारंगत हुआ करते हैं। कुछ कथाओं में चित्रित चरित्रों पर
दृष्टि डालने से यह ज्ञात होता है कि ये पात्र कोई भी
ऐसा कार्य नहीं करते जो सामाजिक आदर्शों और पारि-
वारिक संबंधों के लिए कलंक सिद्ध हो। इन कथाओं का
प्रसिद्ध पात्र खापरिया-चोर अपना मौलिक व्यक्तित्व रखता
है। कुछ चोर पात्र ऐसे भी होते हैं जो सत्य बोलने के
सिद्धांत का पालन करते हैं। ऐसे पात्रों का सत्य बोलना ही
उनके कार्यों में सहायक हो जाता है। इस प्रकार की
कथाओं में - राजा भोज अर खापरियो चोर, खांतिलो-चोर,
सच बोलो चोर, चोर री ओखड़ी, लालजी-पेमजी आदि

Scanned with CamScanner

प्रसिद्ध कथाएँ हैं।

प्राचीन समय में ठगों के पूरे के पूरे गाँव बसे हुए थे। इन ग्रामों को 'ठगा रां गुड़ा' कहा जाता है। नए-2 मेहमानों का अत्याधिक आतिथि सत्कार करके अंत में उसके सारे माल को हथिया लेना और उसे मार डालना इनके प्रमुख कार्य थे। इन दुष्कर्मों के लिए ये लोग अपनी जवान रूपवती कन्याओं को पथिक को भ्रमित करने के लिए साधन स्वरूप उपयोग में लाते थे। इन कथाओं में 'मिनख जमारो', 'ठगा रो गुडो', 'जवारियो ठग', 'एक लुगाई और चार ठग', 'ठगा रो ठरको' आदि कथाएँ प्रचलित हैं।

7) धार्मिक, पौराणिक एवं व्रत कथाएँ →

राजस्थान प्रदेश में जनसामान्य के मनोरंजन एवं धार्मिक प्रवृत्ति को जागृत करने वाली अनेक धर्म कथाएँ प्रचलित हैं। इन कथाओं में देवी-देवताओं को भी साधारण मनुष्य के रूप में व्यवहार करते दिखाया जाता है। लोक ऐसी कथाओं के सुनने व कहने से पुण्य लाभ होने की बात मानता है। इन कथाओं में धर्म भावना प्रमुख रूप से पायी जाती है। धर्म के भरोसे छोड़ा गया कार्य शीघ्र ही पूरा हो जाता है। इन धर्म कथाओं में- पृथ्वी के उद्भव, प्रलयकाल, स्वर्ग-वर्णन, पशुओं के जन्म आदि के संबंध में भी कई कथाएँ मिलती हैं। धर्म के प्रति अत्याधिक आस्था रखने वाली नारी के जीवन में व्रतों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। सप्ताह के प्रत्येक दिन और प्रत्येक माह की प्रत्येक तिथि को कोई न कोई व्रत आता ही रहता है। व्रतों के महत्व को प्रकट करने वाली अनेक कथाएँ हैं जो इन व्रतों के अवसर पर कही जाती हैं। व्रत कथाओं में धार्मिक भावना कूट-कूट कर भरी है। इन व्रत कथाओं के प्रारंभ में किसी भिखारी, लकड़ी बेचने वाले, मछुए आदि को व्रत की ओर प्रेरित होते दिखाया जाता है। व्रत पालन से ही वह धन संपन्न होता है। अधिक धनवान होने पर प्रमादवश उस

Scanned with CamScanner

10

व्यक्ति द्वारा या उसके परिवार के किसी सदस्य द्वारा व्रत पालन में कुछ कमी रह जाती है और देव विशेष के क्रोध का उसको या उसके परिवार को शिकार बनना पड़ता है। अपने द्वारा की गई भूल की वह माफी मांगता है तथा वह गलती पुनः सुधारता है। इन व्रत कथाओं में व्रत संबंधी देवता का सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी ईश्वर के समान चित्रण मिलता है। अनेक बार स्त्रियाँ महीने भर तक व्रत रखती हैं। इन व्रत कथाओं में ये कथाएँ अधिक प्रचलित हैं→ करवाँ चौथ, उभछठ, सूरज रोटे री बात, बच्छबारस, अणत चऊदस, ग्यारस इगियारस री बात, निरजळा इगियारस री बात, संतोषी माता री बात, बैसाख री बात, कातीरी बात, सावण-तीज री बात, पूनम री बात, गणेश चौथ री बात, शिवरात री बात आदि।

* * *